शंकाका कोअी कारण नहीं है

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

# हरिजनसेवक

पृष्ठ १८
दो आना

( संस्थापक : महात्मा गांधी )

भाग १७ सम्पादक : मगनभाअी प्रभुदास देसाअी अंक १६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २० जून, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

## स्वतंत्र भारतमें विदेशी मिशन

१

[कअी साल पहले अेक पत्र-प्रतिनिधिने गांधीजीसे पूछा था कि भारतकी राष्ट्रीय सरकारके मातहत अीसाअी मिशनोंका भारतमें क्या स्थान होगा। गांधीजीके अुत्तरकी रिपोर्ट अखबारोंमें छपी थी, जिसने अीसाअी पादरियोंमें विरोधकी भारी आंधी खड़ी कर दी थी। गांधीजीने अिस तीव्र विरोधका जवाब २३–४–१९३१ के 'यंग अिंडिया' में अिस प्रकार दिया था: — सं०]

विदेशी पादरियोंके विषयमें जो शब्द मुलाकात लेनेवालोंने मेरे मुंहसे कहलवाये हैं, अुनके बारेमें क्रोध या आश्चर्यसे भरे हुअे पत्रलेखकोंने अखबारोंकी कतरनें या अपनी टीकायें मेरे पास भेजी हैं। मेरे कहे हुअे शब्दोंकी सही रिपोर्ट अखबारोंमें छपी है या नहीं, यह मुझसे पूछनेकी सावधानी अेक ही पत्रलेखकने बताअी है। जॉर्ज जोसेफ जैसे व्यक्ति भी, जो अभी तक मेरे साथ काम करते थे और मदुरामें प्रेमसे मुझे अपना मेहमान बनाते थे, अखबारोंकी रिपोर्ट सही है या नहीं, अिसकी जांच करनेकी कृपा किये बिना ही अुबल पड़े हैं। यह सबसे क्रूर प्रहार है।

अेक अखबारनवीसने मेरे मुंहसे ये शब्द कहलवाये हैं:

"यदि वे दयाधर्मके कामों और गरीबोंकी आर्थिक सेवा तक ही सीमित रहनेके बदले डॉक्टरी मदद और शिक्षा वगैराके जरिये लोगोंका धर्म बदलनेका प्रयत्न करेंगे, तो मैं जरूर अुन्हें यहांसे चले जानेको कहूंगा। हरअेक राष्ट्रका धर्म दूसरे किसी राष्ट्रके धर्म जितना ही अच्छा होता है। भारतके धर्म अुसके लोगोंकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे काफी हैं। हमें धर्म-परिवर्तन करनेवाली आध्यात्मिकताकी जरूरत नहीं है।"

मैंने अितनी ज्यादा मुलाकातें दी हैं कि अिस कथनका समय और प्रसंग याद करना मेरे लिअे कठिन है। अितना ही कह सकता हूं कि मैं हमेशा अिस बारेमें जो कहता और मानता आया हूं, अुससे यह बिलकुल अुलटा बयान है। विदेशी मिशनोंके बारेमें मेरे विचार किसीसे छिपे नहीं हैं। पादरी श्रोताओंके सामने मैं कअी बार अुनका प्रतिपादन कर चुका हूं। अिस कारण मेरे विचारोंकी अिस अुलटी रिपोर्टसे सुलग अुठी अिस क्रोधाग्निको मैं समझ नहीं सकता।

अुपरोक्त कथनकी भाषाको बदलकर मैं अुसे यहां सही रूपमें रख देता हूं:

"यदि वे (विदेशी मिशन) शिक्षा, गरीबोंकी डॉक्टरी मदद और मानव दयाके कामों तक सीमित रहनेके बजाय अपनी अिन प्रवृत्तियोंका अुपयोग लोगोंका धर्म बदलनेमें करेंगे, तो मैं अवश्य चाहूंगा कि वे हिन्दुस्तान छोड़कर चले जायं। हरअेक राष्ट्र अपने धर्मको दूसरे किसी राष्ट्रके धर्म जितना ही अच्छा और पवित्र मानता है। हिन्दुस्तानके लोग जिन महान धर्मोंको मानते हैं, वे हिन्दुस्तानके लोगोंकी जरूरत पूरी करनेके लिअे काफी हैं। भारतको अेक धर्मसे दूसरे धर्ममें ले जानेकी कोअी जरूरत नहीं।"

अिस संक्षिप्त कथनको अब मैं विस्तारसे समझा दूं। मैं मानता हूं कि दयाधर्मके कामकी आड़में किया जानेवाला धर्मान्तरका काम कुछ नहीं तो बुरा जरूर है। यहांके लोग निश्चित ही अुससे चिढ़ते हैं। अन्तमें तो धर्म अेक अत्यन्त गहरी व्यक्तिगत वस्तु है; वह हृदयको छूता है। अीसाअी धर्मको माननेवाले किसी डॉक्टरने मेरा कोअी रोग मिटाया हो, तो अुस कारणसे मुझे अपना धर्म क्यों बदलना चाहिये? या मैं अुस डॉक्टरके प्रभावमें होअूं, अुस बीच मुझे अैसे धर्म-परिवर्तनकी आशा या सूचना अुसे क्यों करनी चाहिये? डॉक्टरी सेवा ही क्या अपने आपमें सच्चा पारितोषिक और सन्तोष नहीं है? अथवा, मैं पादरियोंकी शिक्षण-संस्थामें पढ़ता होअूं, अुस बीच मुझ पर अीसाअी धर्मका शिक्षण जबरन् क्यों लादा जाय? मैं तो मानता हूं कि ये प्रथायें अूंचा अुठानेवाली नहीं हैं। और लोगोंमें गुप्त वैर नहीं तो संशय तो पैदा करती ही हैं। धर्म-परिवर्तनके तरीकोंके बारेमें सीजरकी रानीकी तरह लोगोंके मनमें जरा भी शंका नहीं होनी चाहिये। धर्म पार्थिव विषयोंकी तरह दिया नहीं जाता। वह तो हृदयकी भाषाके जरिये दिया जाता है। किसी मनुष्यमें जीवित धर्म हो तो गुलाबका फूल जिस तरह अपनी सुगन्ध फैलाता है अुसी तरह वह अपना प्रकाश फैलाये बिना नहीं रहता। वह आंखसे दिखाअी नहीं देता, अिसलिअे फूलकी पंखुड़ियोंके रंगकी शोभाके बनिस्बत अुसका असर बहुत ज्यादा व्यापक होता है।

तो मैं धर्मान्तरके विरुद्ध नहीं हूं, बल्कि अुसके आधुनिक तरीकोंके विरुद्ध हूं। आजकल धर्मान्तरने दूसरी किसी वस्तुकी तरह अेक व्यापारका रूप ले लिया है। अेक पादरियोंकी रिपोर्टमें यह पढ़नेका मुझे स्मरण है कि हर आदमीके पीछे धर्मान्तरका कितना खर्च आता है; अुसमें 'अगली फसल' के लिअे खर्चका बजट भी पेश किया गया था।

हां, यह मैं अवश्य कहता हूं कि भारतके महान धर्म अुसके लिअे काफी हैं। अीसाअी और यहूदी धर्मके अलावा हिन्दूधर्म और अुसकी शाखायें, अिस्लाम और पारसी धर्म भी जीवित धर्म हैं। कोअी भी अेक धर्म अपने आपमें पूर्ण नहीं है। सारे धर्म अपने-अपने अनुयायियोंको प्रिय हैं। आज अिस बातकी आवश्यकता नहीं कि हर जाति अपने धर्मको दूसरे धर्मोंसे बढ़ा-चढ़ा कर सिद्ध करनेकी कोशिश करे। सच्ची आवश्यकता तो जगतके महान धर्मोंके अनुयायियोंके बीच मित्रता और भाअीचारेका सम्बन्ध कायम करनेकी है। अैसे मित्रताके सम्बन्धसे हम सब अपने-अपने धर्मोंके दोष और मैलको दूर कर सकेंगे।

अूपर जो मैंने कहा है अुस परसे यह फलित होता है कि हिन्दुस्तानको अैसे धर्म-परिवर्तनकी कोअी जरूरत नहीं है। आत्म-

www.vinoba.in

शुद्धि, आत्म-साक्षात्कारके अर्थमें धर्म-परिवर्तन होनेकी आज सबसे बड़ी आवश्यकता है। लेकिन यह चीज धर्म-परिवर्तनका जो अर्थ हमेशा होता आया है वह नहीं है। जो हिन्दुस्तानका धर्म बदलना चाहते हैं, अुनसे क्या यह नहीं कहा जा सकता कि 'डॉक्टर तू अपना ही अिलाज करके स्वस्थ बन'?

२

[यह हिस्सा ३०-१२-१९३९ के 'हरिजनसेवक' में छपे 'तटस्थता क्या है?' नामक लेखसे लिया गया है। — सं०]

आजाद हिन्दुस्तानमें आजका-सा हाल न होगा; अुस वक्त सभी धर्म बराबरीके नाते फले-फूलेंगे। आज नाममात्रको ही सही, शासकोंका अीसाअी मजहब है और अिसलिअे अीसाअियोंके साथ जो रियायतें की जाती हैं वे और किसी धर्मवालोंके साथ नहीं की जातीं। जो सरकार प्रजाके प्रति जिम्मेदार होगी, वह अेक धर्मके मुकाबले दूसरे धर्मके साथ रियायत नहीं कर सकती। मगर अिसमें मुझे कोअी शंका नहीं मालूम होती कि जो हिन्दू अपने धर्मको छोड़कर दूसरे धर्ममें चले गये हों अुनके वापस आने पर हिन्दू लोग अुन्हें बधाअी देंगे। मान लीजिये कि किसी हिन्दू धर्म-प्रचारककी लुभावनी बातोंमें आकर गरीब बस्तियोंमें — अगर अमेरिकामें अैसी कोअी बस्तियां हों — रहनेवाले कुछ अमरीकन हिन्दू बन जायं और थोड़े दिन हिन्दू कहलाकर फिर अीसाअी हो जायं, तो स्वतंत्र अमेरिकाके अीसाअियोंको कैसा लगेगा? मेरी समझसे तो वे खुशी ही मनायेंगे। कुछ पादरी अज्ञानी लोगोंसे अपने बापदादोंका धर्म छुड़वानेमें जिन तरीकोंसे काम लेते हैं, अुनके बारेमें मैं पहले भी शिकायत कर चुका हूं। जो लोग किसी धर्मको स्वीकार करना चाहें, अुन्हें अुपदेश देना अेक बात है, और समूहके समूहोंको बहकाना दूसरी बात है। और अगर ये भरमाये हुअे लोग आंखें खुलने पर अपने पुराने धर्ममें फिर जा मिलें, तो जिन लोगोंको ये छोड़कर चले गये थे अुन्हें आनन्द होना स्वाभाविक ही है।

३

[गांधीजीके साथ हुअी कुछ मित्रोंकी बातचीतकी प्यारेलालजी द्वारा ली हुअी रिपोर्टमें से नीचेका हिस्सा दिया गया है। देखिये 'हरिजनसेवक', ७-१-१९३९ — सं०]

"आज जिस नवभारतका निर्माण हो रहा है, अुसमें अीसाअी मिशनोंका क्या स्थान है? अिस महान कार्यमें वे किस प्रकार सहायक हो सकते हैं?

"भारत जो कुछ है और जो कुछ कर रहा है, अुसका आदर करके", गांधीजीने जवाब दिया। "अभी तक तो वे अैसे शिक्षकों और प्रचारकोंके रूपमें यहां आते रहे हैं, जिनके अन्दर भारत और भारतके महान धर्मोंके बारेमें अजीब-अजीब धारणायें रही हैं। अुन्होंने हमारे देशको अैसे अंधविश्वासी काफिरोंका मुल्क कहा है, जो घोर अज्ञानी और नास्तिक हैं। और मर्डोकके कथनानुसार तो हम शैतानके ही वंशज हैं! बिशप हेबरने 'ग्रीन लैण्डके बर्फीले पर्वतोंसे' नामक अपनी प्रसिद्ध स्तुतिमें क्या भारतको अैसा देश नहीं बतलाया है, जहां केवल अधम जन ही बसते हैं? मुझे तो अिसमें अीसाकी भावनाका सर्वथा अभाव ही मालूम होता है। अिसलिअे मेरा व्यक्तिगत विचार यह है कि अगर आप अैसा महसूस करते हों कि हिन्दुस्तानके पास दुनियाको देनेके लिअे कोअी सन्देश है, हिन्दुस्तानके धर्म भी सच्चे हैं — हालांकि अपूर्ण मानवों द्वारा अवतरित होनेके कारण संसारके सभी धर्मोंकी तरह अुनमें भी अपूर्णता है — और हमारे साथ मिलकर सत्यकी शोध करने और हमें साथीकी तरह मदद देनेके लिअे आप यहां आयें, तो आपके लिअे यहां स्थान है। लेकिन अगर आप अंधेरेमें भटकते हुअे लोगोंमें 'सच्चे धर्मोपदेश' के प्रचारक बनकर आयें, तो जहां तक मेरा सम्बन्ध है आपके लिअे यहां कोअी स्थान नहीं है। आप चाहें तो अपने आपको हम पर जबरन लाद भले ही दें।"

**मो० क० गांधी**

## गयामें विनोबाजी — २

अुदीयमान सूर्यनारायणकी साक्षीमें गयाकी स्त्रियोंने विनोबाजीको कुमकुम तिलक लगाया, सूतांजलि अर्पण की और सायंकाल अस्ताचलकी ओर जानेवाले सूर्यनारायणकी साक्षीमें विहार कांग्रेसके कार्यकर्ताओंने बिहारकी भूमि-समस्या हल करनेके लिअे ३२ लाख अेकड़ भूमि प्राप्त करके रामराज्यकी स्थापना करनेकी ओर अग्रसर होनेका संकल्प किया।

### स्त्रियोंकी जिम्मेदारी

स्त्रियोंकी प्रातःकालकी सभामें विनोबाजीको सर्वप्रथम गांधीजीका स्मरण हुआ, जिन्होंने स्त्रियोंको अुनके व्यक्तित्वका भान कराया। अहिंसा विकसित मानव-समाजका लक्षण है, जिसे समाजमें स्थिर करके समाजको विकासकी ओर ले जानेके लिअे अुनके सारे प्रयत्न थे। विनोबाजीने कहा, "गांधीजी मानते थे कि स्त्रियोंमें अहिंसाका गुण विशेष रूपसे होता है। अिसलिअे अुनका काम जितना स्त्री कर सकती है, अुतना पुरुष नहीं कर सकता।"

फिर विनोबाजीने स्वर्गीय जमनालालजी बजाजकी सहधर्मिणी श्री जानकीदेवी बजाजका जिक्र किया, जो आजकल गयाकी कड़ी धूपमें भी दिनभर घर-घर घूमकर स्त्रियोंसे गहनोंका दान ले रही हैं। अुन्होंने बेजमीन किसानोंके खेतोंमें अेक सौ आठ कुअें बनानेका संकल्प किया है। विनोबाजीने कहा: "गहनोंके कारण ही स्त्रियां डरपोक बनती हैं। गहने छोड़ दो और निर्भय बनो।" गयाकी महिला-समितिमें हिन्दू और मुसलमान बहनें प्रेमसे रहती हैं, दोनों अेक-दूसरेके त्यौहारोंमें हिस्सा लेती हैं, होलीमें रंग खेलती हैं और अीद पर सेवअीं बनाकर खाती हैं। यह सब सुनकर विनोबाजी बहुत प्रसन्न हुअे।

### सतीकी निष्ठा

स्त्रियोंको शान्ति निर्माण करनेका संदेश देकर विनोबाजी बिहार प्रान्तके भूदान-कार्यकर्ता-सम्मेलनमें महान क्रांतिका सन्देश देने आये। प्रान्तके कोने-कोनेसे आये हुअे ६०० से अधिक कार्यकर्ताओंमें से हर जिलेके अेक अेक प्रमुख कार्यकर्ताने सभाको अपने कार्यका वृत्तान्त सुनाया। श्री दामोदरभाअीने भूदान-यज्ञकी प्रयोगशाला — गया जिलेमें होनेवाले स्फूर्तिदायक कार्यका विवरण अुपस्थित किया। बादमें श्री विनोबाजीने कहा: "क्रांतिकी बातें तो बहुत होती हैं, लेकिन क्रांतिके लिअे सतीकी निष्ठा चाहिये। सतीके लिअे पतिके बिना जीवन ही नहीं होता है। लेकिन अभी तक अुस भावनाका अुदय हमारे देशमें बहुत कम हुआ है। जिन्हें क्रांतिका दर्शन है, वे अिस कामको ठीक समझे हैं। गुजरातके सर्वोत्तम कार्यकर्ता रविशंकर महाराज अिसी निष्ठासे अिस काममें लगे हुअे हैं और १९५७ तक अपना सारा समय अिसीमें देनेका अुन्होंने निश्चय किया है। अभी वे चीन गये थे, तब कुछ मित्रोंने अुनके बारेमें शिकायत की थी। लेकिन मैंने कहा कि जाने दो। चीनका दर्शन ही अुन्हें प्रेरणा देगा और यहां आते ही वे भूदानके काममें लग जायेंगे; क्योंकि यहां पर सिवाय भूदानके कोअी भी काम नहीं हो रहा है। और ठीक हुआ भी वैसा ही। वे बूढ़े हैं पर अुनका दिल जवान

www.vinoba.in

है। वे निरन्तर अिसके लिअे घूम रहे हैं। अिसलिअे मैं गुजरातके बारेमें निश्चिन्त हूं। अुसी तरह जयप्रकाशजीके दिलमें भी क्रांतिकी आग जल रही है। जिन्होंने अुनके भाषण सुने हैं, वे जानते हैं कि यद्यपि वे बोलते हैं अत्यन्त शान्तिसे और ठण्डे दिमागसे, फिर भी अुनके दिलमें कैसी आग जल रही है।" अिसके बाद बड़े दुःखके साथ विनोबाजीने सारन जिलेका जिक्र किया। क्योंकि वहांके कार्यकर्ताओंने पूजनीय राजेन्द्रबाबूके नामसे पत्रक निकलवाकर बांटे, सैकड़ोंने भूदान-यज्ञमें कार्य करनेका लिखित आश्वासन दिया, फिर भी काम कुछ नहीं किया। अुन्होंने विनोदमें कहा, "अितने सारे कार्यकर्ताओंने नाम दिये पर सब बोगस निकले। क्रांति-कार्यके लिअे तो सब ऋतुअें अनुकूल होती हैं। भगवानका भक्त यह नहीं कहता कि अभी गरमी है या बारिश है, अिसलिअे भक्ति नहीं करूंगा। दिलमें आग हुअे वगैर क्रांतिका काम नहीं होता। जब 'डू आर डाय' के निर्धारसे काम करनेवाले कार्यकर्ता निकलेंगे तभी यह काम होगा। क्योंकि यह समाज-रचनामें आमूल परिवर्तन करनेका काम है।"

नामके लिअे काम करनेवालोंके बारेमें विनोबाजीने कहा कि "काम हमारा होना चाहिये और नाम परमेश्वरका होना चाहिये। रामराज्यकी स्थापनाका अितना बड़ा काम करना है, तो अिसमें जो भी काम करेंगे अुनका नाम परमेश्वरके नाममें डूब जायेगा।"

### जमींदारोंका आश्वासन

विनोबाजी अकसर कहते हैं कि वे न सिर्फ गरीबोंके, बल्कि श्रीमानोंके भी प्रतिनिधि हैं। क्योंकि वे सबका अुदय चाहते हैं। अिसका प्रत्यक्ष दर्शन बार-बार हुआ है। गयामें भी जमींदारोंके प्रतिनिधियोंने विनोबाजीको अपने दुःख सुनाते हुअे कहा कि आप ही हमारे रक्षक हैं। विनोबाजीकी सहकारकी मांग पूरी करते हुअे अुन्होंने आश्वासन दिया कि वे न सिर्फ खुद जमीन देंगे बल्कि औरोंसे भी दिलवायेंगे। गयाकी विनोबा स्वागत-समितिके अेक बड़े जमींदार श्री भूपबाबूने विनोबाजीको अपनी सारी जमीन दे दी और वे पूरी लगनसे अपने काममें लग गये।

### पंचायतवाले भी

अुसी दिन दोपहरमें गया जिलेके पंचायतवालोंका सम्मेलन हुआ, जिन्होंने अेक प्रस्ताव पास करके गया जिलेसे ३ लाख अेकड़ भूमि प्राप्त करनेका संकल्प किया। विनोबाजीने अुन्हें अुनकी जिम्मेदारीका भान कराते हुअे कहा कि आपकी संस्था काम करनेवाले लोगोंकी संस्था है, अिसलिअे आपको सिर्फ प्रस्ताव करके चुप नहीं बैठना चाहिये। आपको गंभीरतासे अिस कामकी अहमियतको सोचना चाहिये। विनोबाजीके भाषणके पश्चात् पंचायतके मुखियाओंमें से कअीने अुठकर अपना छठा हिस्सा दान देका और कअीने अपना समय अिस काममें देनेका संकल्प घोषित किया।

### निरहंकारिताकी आवश्यकता

शामकी प्रार्थना-सभामें विनोबाजीने कार्यकर्ताओंसे निरहंकार बुद्धिसे काम करनेके लिअे कहा: "समाज-रचनामें अुथल-पुथल करनेका अितना बड़ा काम छोटे दिलवालोंसे नहीं हो सकता। अिसके लिअे तो अहंकार छोड़कर फलत्यागकी वृत्तिसे काम करना चाहिये। काम हम करेंगे और फल परमेश्वरको अर्पण कर देंगे। अगर फलत्यागकी वृत्ति रहे, तो संस्थामें रहकर और घरका काम करके भी हम मोक्ष पा सकते हैं।"

### बिहार कांग्रेसका संकल्प

आम सभाके बाद अुसी विशाल गांधी-मण्डपमें बिहार प्रान्तके कांग्रेस कार्यकर्ताओंकी महत्त्वपूर्ण सभा डॉ० अनुग्रहनारायणकी अध्यक्षतामें आरम्भ हुअी। अिस समय बिहार कांग्रेस अैसा कदम अुठाने जा रही थी, जिसका गुणगान भविष्यके अितिहासकार करेंगे। ३२ लाख अेकड़ भूमि प्राप्त करनेके अुसके अिस संकल्पने विनोबाजीको भी गद्‌गद कर दिया। आज अुन्होंने विचार-शासनकी बात नहीं की, सामाजिक क्रांतिका शास्त्रीय विवेचन भी नहीं किया। आज तो वे परमेश्वरकी असीम कृपा, अपार करुणा और अनन्त प्रीतिके महासागरमें अवगाहन कर रहे थे, जिसने हमारे जैसे कमजोरोंको अुसके महान कार्यका औजार बनाकर हमें अेक अभूतपूर्व अवसर दिया है।

अपने भाषणमें विनोबाजीने कहा: "बिहारके कांग्रेसजनोंका मैं अिस प्रस्तावके लिअे अभिनन्दन करता हूं। क्योंकि अेक संस्थाके नाते पहली बार यहांकी कांग्रेसने यह काम अुठा लिया। बिहारका पहला चार लाखका कोटा पूरा हो गया है और जैसे गंगा अुत्तर-प्रदेशसे यहां आने पर अधिक विशाल बन जाती है, वैसे ही अुत्तर-प्रदेशका प्रतिदिनका औसत अेक हजार अेकड़ था तो यहांका ढाअी हजार हो गया है।" अिसके बाद विनोबाजीने परमेश्वरके प्रसादका वर्णन करते हुअे कहा, "बिहारमें टूटेफूटे दुर्बल लोगोंने, जहां असंख्य पक्षभेद पड़े हैं, अितना बड़ा संकल्प किया तो अिसका कारण यही है कि यहांकी भूमिमें कुछ पुण्यकण पड़े हुअे हैं। अिसीलिअे कमजोरोंमें अितनी बड़ी भाषा बोलनेकी हिम्मत आयी। आज गौतम और गांधीकी आंखें हमारे अिस कामकी तरफ हैं और अुनका आशीर्वाद भी हमें प्राप्त है। अुन्होंने अिसी भूमिसे धर्म-चक्रका प्रवर्तन आरम्भ किया था। अिस भूमिमें अैसी पुण्य स्मृतियां पड़ी हैं, जो अचेतनको भी चेतन बनायेंगी। दुर्बलको भी बलवान बनायेंगी। अुपनिषदोंमें कहा है: 'तू ब्रह्म है।' अिससे छोटा वाक्य आकारमें और अिससे बड़ा वाक्य अर्थमें मैंने दुनियाकी किसी भी दूसरी भाषामें नहीं देखा। हम दुर्बल हैं, पामर हैं पर ऋषि हमें समझाता है कि तू शव नहीं, शिव है। यह देहरूपी अूपरका छिलका फेंककर अन्दर देख तो अन्दरकी अमृत-मधुर आत्माका दर्शन होगा। अिसी वाक्यने मुझे बल दिया है। नहीं तो मैंने अपनेसे कमजोर व्यक्ति अभी तक नहीं देखा है।

### गांधीजीका पुण्य

हमारे जो दोष हमारी प्रगतिके मार्गमें बाधा देते हैं, अुनका जिक्र करते हुअे विनोबाजीने कहा, "वैमनस्य और आलस्य, ये हमारे प्रमुख दोष हैं और बाकी सारे अुनके अिर्द-गिर्द पड़े हैं। लेकिन मुझे विश्वास है कि अिस महान यज्ञकी भड़कती हुअी ज्वालामें हम अुनकी आहुति देंगे। भारतीय जनताने मुझ पर जो विश्वास प्रकट किया है, वह कोअी छोटी बात नहीं है। दूसरे जमीन बांटेंगे तो पक्षपात हो सकता है, अैसी शंका अुठायी है। पर मुझसे पक्षपात नहीं होगा यह सबने मान लिया है। यह सामान्य विश्वास नहीं है। आप मेरेमें जो पुण्य पाते हैं, वह मेरा नहीं है, महात्मा गांधीका है और ऋषियोंका है। अगर हम यह काम पूरा करेंगे, तो सारी दुनियाके लोग देखने आयेंगे कि प्राणसे प्यारी जमीन देनेवाले ये लोग कैसे हैं? जब हमने अितना बड़ा संकल्प किया है, तो हमें पुराना सारा प्रिय-अप्रिय भूल जाना चाहिये। हमें सिर्फ दिलका दरवाजा खोलना चाहिये। भगवान सूर्यनारायण अपनी समस्त किरणोंके साथ बाहर खड़े हैं।

आखिरमें बिहारवासियोंकी प्रेम-वर्षाके लिअे कृतज्ञता व्यक्त करके विनोबाजीने कहा, "परमेश्वर मुझे आपके प्रेमका पात्र बना दे, अैसी मेरी प्रार्थना है।"

नि० हि०

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२० जून १९५३

## शंकाका कोअी कारण नहीं है

श्री मीराबहनने कुछ सप्ताह पहले भूदान-आन्दोलन पर अेक लेख लिखा था और वह जिस तरह चल रहा है, अुसकी कुछ टीका की थी। लेखका शीर्षक था "भूदान-आन्दोलनके विषयमें मेरी शंकाअें"। स्वभावतः अिस लेख पर खासकर अुत्तरमें बहुत लोगोंका ध्यान आकर्षित हुआ, और अधिकारी व्यक्तियोंने अुसमें अुठाये गये प्रश्नोंकी अखबारोंमें काफी चर्चा की। अखबारोंमें आअी हुअी अिस टीका-टिप्पणीका श्री मीराबहनने अुत्तर दिया और कहा कि अिस सारी चर्चाके बाद भी अुनकी शंकायें कायम रही हैं, बल्कि बढ़ गयी हैं। यह खेदकी बात है कि मीराबहनकी शंकायें दूर नहीं हुअीं। मैं आशा करता हूं कि अिस विषयका और ज्यादा अध्ययन और चिन्तन करनेसे वे दूर हो जायंगी; और मैं यह सुझाना चाहता हूं कि अगर वे प्रत्यक्ष यह देखें कि बिहारमें श्री विनोबाकी देखरेख और मार्गदर्शनमें यह आन्दोलन किस तरह चल रहा है तो ज्यादा अच्छा होगा। मैं अैसा अिसलिअे कहता हूं कि अुनके दोनों लेख पढ़ जानेके बाद मुझे अैसा लगा है कि जिन बातोंको अुन्होंने शंकाका नाम दिया है, वे दरअसल शंकायें नहीं हैं; बल्कि आन्दोलन चलानेवालोंको अुनकी ओरसे दिये गये कुछ सुझाव हैं। अुनके लेखोंमें अैसी कोअी बात नहीं है, जिससे आन्दोलनके विषयमें शंका पैदा हो। क्योंकि सच पूछिये तो भूदान-आन्दोलन अपने आपमें जसा है, अुसके खिलाफ अुन्होंने कोअी बुनियादी मुद्दा नहीं अुठाया है।

अुनके लेखोंमें अुठाये गये मुद्दे संक्षेपमें अिस प्रकार हैं:

१. आन्दोलन चलानवाले वृक्षों और पशुओंकी आवश्यकताओंके विषयमें कुछ नहीं कहते।

२. लोगोंको मिली हुअी जमीनके ठीक आंकड़े और अुसका हिसाब पूरी तरह बताया नहीं जाता।

३. दानमें दी हुअी जमीनकी किस्म अकसर घटिया होती है; अुसका अधिकांश अच्छी किस्मका नहीं है।

४. जमीनके आज जितने टुकड़े हैं अुससे भी ज्यादा छोटे-छोटे टुकड़े हो जायंगे, खासकर अिसलिअे कि जमीन जिनके पास बहुत कम है अुनसे भी दानमें कुछ-न-कुछ हिस्सा देनेका अनुरोध किया जाता है।

५. मिली हुअी जमीनका वितरण सिर्फ बेजमीनोंमें ही नहीं, बल्कि जिनके पास बहुत अपर्याप्त जमीन है अुनमें भी होना चाहिये।

पाठक देख सकते हैं कि ये बातें अैसी नहीं हैं जिन पर बहस करनेकी जरूरत हो और न अुनसे अिस आन्दोलनकी बुनियादी आवश्यकता और अुद्देश्यके विषयमें ही कोअी शंका पैदा होनी चाहिये। बहुतसे बहुत अुनसे यह प्रगट होता है कि अिस किस्मके कार्यक्रममें खुद मीराबहन कितनी सावधानी रखतीं। वे दूसरोंसे भी अुसी सावधानीकी अुम्मीद करती हैं और अिसमें कोअी गलती नहीं है। लेकिन अिसकी कोअी सीमा होती है, और हो सकता है कि वह अमुक व्यक्तिकी अपेक्षा पूरी न कर सके।

अब अुनके सुझावों पर अेक-अेक करके विचार करें। यह तो मैं कह ही चुका हूं कि आन्दोलनके खिलाफ कोअी गंभीर या बुनियादी आक्षेप अुनमें नहीं है। अुदाहरणके लिअे, हमारी खेतिहर जनताके जीवनके पुनर्गठनकी जो भी योजना बनेगी, अुसमें वृक्षों और पशुओंकी रक्षा और वृद्धि पर तथा अिसी तरहकी दूसरी कअी बातों पर ध्यान देना ही होगा। अुनका अलगसे अुल्लेख करनेकी जरूरत नहीं होती; खेती सम्बन्धी सुधारोंके कार्यक्रममें अुनका समावेश हो ही जाता है। ज्यों ज्यों कामकी प्रगति और विकास होता है, त्यों त्यों अुसमें वे अपने आप आ जाते हैं।

बेशक हिसाब जरूर अच्छी तरह रखा जाना चाहिये। लेकिन हिसाबका विवरण रखनेके कअी तरीके हो सकते हैं और अुसका निर्णय जो काम हम कर रहे हों अुसे देखकर किया जाना चाहिये। अेक बढ़ते हुअे जन-आन्दोलनकी शुरुआतमें बहुत ज्यादा बारीकीकी आवश्यकता नहीं है।

दानमें मिली हुअी जमीन अगर घटिया किस्मकी है, तो अिसका दोष आन्दोलनको नहीं दिया जा सकता। अिसका दोष यदि किसी पर है तो दाता पर ही है। मनुष्यका स्वभाव कैसा है यह तो हम जानते ही हैं। नचिकेताकी कहानी कितनी प्राचीन है। अुतने प्राचीन कालमें भी हम देखते हैं कि नचिकेताको अपने पिताका विरोध अिसलिअे करना पड़ा कि अुसने बूढ़ी और सूखी गायें दानमें दी थीं। लेकिन अिससे यह तो नहीं सिद्ध होता कि गोदान ही बुरा है। अिसी तरह जमीन घटिया हो या बढ़िया, अगर वह समाजके हाथमें आती है और अुसका अुपयोग गरीब बेजमीनोंके हितमें किया जाता है, तो अुसे लेनेसे अिनकार नहीं किया जा सकता। यद्यपि दातासे यह जरूर कहा जा सकता है कि अुसका दान अच्छा नहीं था। खराब जमीनको सुधारना होगा और अुसका अुत्तम अुपयोग करना होगा।

जमीनके छोटे-छोटे टुकड़ोंकी बुराअी भूदानसे नहीं पैदा होती और न भूदानसे वह बढ़ती है। बल्कि बात अिसकी अुलटी है। किसी महान अुद्देश्यके लिअे दानमें दिया गया गरीबका पैसा जितना मूल्यवान होता है, अुसी तरह गरीब द्वारा दिया हुआ जमीनका टुकड़ा भी बहुत मूल्यवान और शुद्ध दान है। समर्थ लोगों द्वारा दी गअी घटिया जमीनके दानके साथ जब अुसकी तुलना करते हैं, तो अुसकी महत्ता और भी बढ़ जाती है। अुससे भूदान-आन्दोलनको नैतिक और आध्यात्मिक बल मिलता है। अुसका यह अर्थ कदापि नहीं होता कि अंतिम बंटवारेमें भी यह टुकड़ा जैसाका तैसा रह जायगा। अगर भूदान-आन्दोलन चलानेवाले भूमिहीनोंको भूमि बांटते समय जमीनके छोटे टुकड़े न होने देनेकी सावधानी रखें, तो अिससे हमारा समाधान हो जाना चाहिये। छोटे-छोटे टुकड़ोंमें बंटी हुअी जमीनको फिरसे पर्याप्त बड़े खेतोंका रूप देनेका काम राज्यको भी करना ही है।

अिसी तरह अपर्याप्त जमीनवालोंको जमीन देनेकी बात भी विवादका विषय नहीं हो सकती। जमीन अुतनी ज्यादा मिले तो वैसा कर सकते हैं। भूदान-आन्दोलन चलानेवालोंने अपने सामने यह अुद्देश्य रखा है कि हरअेक भूमिहीन कुटुम्बको कम-से-कम ५ अेकड़ जमीन मिल जाय। अिसमें अपर्याप्त जमीनवालोंका भी समावेश हो जाता है या किया जा सकता है। लेकिन यह तो मानना होगा कि अैसे लोग अुनकी अपेक्षा अधिक अच्छी स्थितिमें हैं जिनके पास बिलकुल जमीन नहीं है। अिसलिअे जमीन पानेका पहिला अधिकार भूमिहीनोंका ही है। अिससे यह अनुमान करना कि अपर्याप्त जमीनवालोंको छोड़ दिया गया है ठीक नहीं होगा। अगर काफी जमीन मिले तो ५ अेकड़का अुनका कोटा भी पूरा किया जा सकता है। हमारी नजर अिसी बात पर होनी चाहिये और सब लोगोंको मिलकर अधिकसे अधिक भूदान प्राप्त करनेके लिअे देशव्यापी प्रयत्न करना चाहिये।

www.vinoba.in

मीराबहन द्वारा अुठाये गये सवालोंके अुत्तरमें मैं अभी अिससे अधिक कुछ नहीं कहूंगा। अन्तमें अितना ही कहूंगा कि अुनके अिन सवालोंसे किसी तरहकी शंका नहीं खड़ी होनी चाहिये। आवश्यकता होने पर भूदान-कार्यकर्ताओंकी परिषद्में अुन पर विचार किया जा सकता है और अुचित निर्णय लिया जा सकता है।

अन्तमें दो शब्द कार्यकर्ताओंसे कहने हैं। मैं अुम्मीद करता हूं कि वे मीराबहन द्वारा अुठाये गये अिन प्रश्नों पर ध्यान देंगे और अुनका सावधानीके साथ अुचित समाधान करेंगे। हमें यह स्पष्ट समझना चाहिये कि आन्दोलनका अुद्देश्य जमीनके पुनर्वितरणके विषयमें शांतिपूर्ण क्रांति करनेका है। वह अुसी प्रक्रियाका अेक अंश है, जो हमारे देशमें गांधी-युगमें शुरू हुअी। आजादीकी लड़ाअीके दरमियान पुनर्निर्माणके कुछ प्रमुख सवालों पर लोकमतको बहुत ठीक तालीम मिली; जैसे, स्वराज्य मिलने पर हम लोग देशी राज्य नहीं रखेंगे, जमींदारी और निष्क्रिय जमींदारीकी (absentee landlordism) बुराअी खतम कर दी जायगी और स्वराज्यकी नअी अर्थ-रचनामें गरीबोंको मदद दी जायगी, ताकि वे अुन्नति करें और प्रतिष्ठित नागरिकोंकी तरह रह सकें। भारतके संविधानमें अिन बुनियादी सुधारोंको स्थान दिया गया है। अिस शांतिपूर्ण क्रांतिकी प्रक्रियाका आरम्भ अिस तरह हुआ था और अब हमें अुसे आगे बढ़ाना है। स्वर्गीय सरदार पटेलने देशी राजाओंको राष्ट्रके व्यापक हितमें अपने अधिकार छोड़नेके लिअे राजी किया और अुनके राज्योंको विलीनीकरणकी अेक विशेष संधिके जरिये भारतके साथ अेक कर दिया। श्री विनोबाने जमींदारी आदिकी बुराअीका अन्त लानेके लिअे भूदानके अुपायकी योजना की है। राष्ट्रकी प्रगतिके लिअे अुसका पूरा अमल होना चाहिये। अुसके बाद मुट्ठीभर लोगोंके हाथमें केन्द्रित पूंजीका और अुस पूंजीके जरिये वैयक्तिक मुनाफेका सवाल बाकी रह जाता है। अिस अनिष्ट परिस्थितिके सुधारके लिअे भी हमें कोअी शांतिपूर्ण हल खोजना है। मेरे कहनेका आशय यह है कि भूदान-आन्दोलनको अिस व्यापक प्रक्रियाके अंगके रूपमें देखना चाहिये। भूदान-आन्दोलन अुस शांतिपूर्ण क्रांतिको आगे बढ़ा रहा है, जिसका आरम्भ अेक पीढ़ी पहले गांधीजीने किया था। अिसलिअे अुसके हेतु और अुद्देश्यके विषयमें शंकाका कोअी कारण नहीं होना चाहिये। वह नअी परिस्थितिमें पैदा हुअे नये बलोंके दबावसे अुत्पन्न हमारे रचनात्मक कार्यक्रमका अेक नया कार्य है। अुसे राष्ट्रके रचनात्मक प्रयत्नका अभिन्न अंग मानना चाहिये। गांधीजी खादी तथा दूसरे रचनात्मक कार्योंका महत्त्व बतलाते हुअे अकसर गीताकी यह अर्थपूर्ण अुक्ति कहा करते थे कि 'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्'— अिस धर्मका स्वल्प आचरण भी महान् भयसे रक्षा करता है। यह अुक्ति भूदान-आन्दोलनके विषयमें भी अुतनी ही चरितार्थ होती है। अिसलिअे अुसके विषयमें हमारे मनमें कोअी शंका नहीं रहनी चाहिये।

८-६-'५३ **मगनभाअी देसाअी**
(अंग्रेजीसे)

---


## रचनात्मक कार्यक्रम

**[दूसरा संस्करण]**

लेखक: **गांधीजी**

**अनु० काशिनाथ त्रिवेदी**

कीमत ०-६-० डाकखर्च ०-२-०

**नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-९**


# प्राथमिक शालाओंमें कताअी

सन् १९४६ में जब हमारे हाथमें राजनीतिक सत्ता आअी, तब चरखा-संघने बड़ी आशासे केन्द्रीय सरकार और राज्य-सरकारोंके पास खादी-कामको प्रोत्साहन देनेके लिअे कुछ सूचनायें भेजी थीं। अुनमें अेक यह भी थी कि मिडिल तक सब प्राथमिक शालाओंके अभ्यासक्रममें लाजिमी तौर पर हाथ-कताअीका विषय दाखिल किया जाय और हरअेक पाठशालामें हाथ-सूतकी बुनाअीका प्रबन्ध हो। लेकिन अुस समय अुसका कोअी परिणाम नहीं निकला।

बादमें सन् १९४८ में पूनामें सब राज्योंके शिक्षामंत्रियोंका अेक सम्मेलन हुआ। अुसमें तय हुआ कि सब प्राथमिक शालाओंमें (अ) कताअी-बुनाअी, (आ) खेती-बागवानी और (अि) गत्ते तथा लकड़ीका काम, अिन तीनोंमें से कोअी अेक अुद्योग दाखिल किया जाय। अन्य राज्योंमें तो अिस बात पर विशेष ध्यान दिया गया नहीं दीखता, परन्तु बम्बअी राज्यमें अिसका अमल करनेकी काफी कोशिश की गअी।

यद्यपि अूपर तीन विषय गिनाये गये हैं, लेकिन अधिकतर पाठशालाओंमें कताअी ही दाखिल की जा सकी। अिसका कारण यह नहीं है कि अधिकारीवर्गको कताअी विशेष प्रिय है, परन्तु यह है कि अन्य विषयोंकी अपेक्षा कताअी दाखिल करना अधिक आसान था। बुनियादी शालाओंमें बुनियादी दस्तकारी कौनसी हो यह प्रश्न जब अुठता है, तब अनेक लोग आक्षेप करते हैं कि कताअीको बुनियादी दस्तकारी रखनेका आग्रह क्यों रखा जाता है? वास्तवमें अैसा कोअी आग्रह है ही नहीं। कोअी भी अुपयुक्त दस्तकारी शिक्षाका माध्यम बनाअी जा सकती है। खेती-काम सबसे श्रेष्ठ माध्यम है। कताअीको टालते हुअे भी आखिर हम देखते हैं कि बहुतेरी बुनियादी शालाओंमें कताअी ही माध्यम बनी हुअी है, क्योंकि व्यावहारिक दृष्टिसे दस्तकारीके रूपमें कताअीका अुपयोग करना औरोंकी तुलनामें आसान है।

पाठशालाओंमें कुछ वर्षों तक कताअी दाखिल हो जाने पर भी अनेक जिलोंसे यह शिकायत आती रही कि अुसमें जैसा यश मिलना चाहिये वैसा नहीं मिल रहा है। पर सूरत जिलेकी पाठशालाओंकी बात कुछ दूसरी ही रही है। वहांका काम अुत्साहपूर्वक होता रहा और साल-ब-साल बढ़ता रहा। सूरत जिला स्कूलबोर्डका कार्य-विवरण अभी हालमें प्रकाशित हुआ है। अुसमें नीचे लिखी हकीकत दी गअी है। शिक्षाप्रेमी लोग अुस कार्य-विवरणमें से अुस विषयका पूरा हिस्सा पढ़ लेंगे तो लाभ होगा।

अुसमें बुनियादी शिक्षणका भी विवरण दिया गया है। मैं तो यहां केवल अुन शालाओंका जिक्र कर रहा हूं, जिनमें अूपर लिखे तीन अुद्योगोंमें से कोअी अेक अुद्योग दाखिल किया गया है। सन् १९५१-'५२ में २३१ पाठशालाओंमें नीचे लिखे मुताबिक अुद्योग चालू थे:

| शालाओंकी संख्या | अुद्योग |
|---|---|
| १६४ | कताअी |
| ४४ | कताअी और बुनाअी |
| १३ | खेती |
| १० | गत्ते और लकड़ीका काम |
| २३१ | |

कार्य-विवरणमें लिखा है कि प्रारंभमें अध्यापकोंका प्रशिक्षण अधूरा होनेके कारण बुनाअीके काममें काफी अड़चन हुअी। बादमें सब काम ठीक-ठीक अुत्साहपूर्वक होता गया। कताअी-शिक्षणमें सफलता मिली।

'हरिजन' के पाठकोंको मालूम है कि चरखा-जयंतीके निमित्त श्री नारणदास गांधी हर साल कुछ नियत दिनोंके लिअे कताअी-

www.vinoba.in

यज्ञकी प्रेरणा देते हैं। अुस सिलसिलेमें सूरत जिलेकी अिन पाठशालाओंने भी विशेष अुल्लेखनीय काम किया है। वहां यह यज्ञ तीन वर्षोंसे चलता आ रहा है। नीचे लिखे आंकड़े अुसकी तथा अुन पाठशालाओंके कताओी-शिक्षणकी सफलता सावित करते हैं। ये आंकड़े पूरे वर्षमें से करीब अस्सी दिनके हैं। अिसके अलावा वर्षके बाकी दिनोंमें जो कताओी हुअी, वह अलग है।

**सूत्र-यज्ञके तीन सालके आंकड़े**

| | १९५०–५१ | १९५१–५२ | १९५२–५३ |
|---|---|---|---|
| यज्ञमें भाग लेनेवाली शालाओंकी संख्या | १०९ | १७९ | २२७ |
| विद्यार्थियोंकी संख्या | ६,५०५ | ७,९९७ | ९,४८४ |
| शिक्षकोंकी संख्या | ६५० | ९२८ | ९७१ |
| पालकोंकी संख्या | १,५०३ | २,१८३ | १,९३९ |
| कुल संख्या | ८,७६७ | ११,२८७ | १२,६२१ |
| विद्यार्थियों द्वारा काती हुअी गुंडियां | ७१,६७८ | १,३१,२५८ | १,६९,६१९ |
| शिक्षकों द्वारा काती हुअी गुंडियां | १४,४९८ | ४०,९४६ | ३१,०६४ |
| पालकों द्वारा काती हुअी गुंडियां | ४०,२६६ | ६४,५८६ | ८७,२७८ |
| कुल | १,२६,४४२ | २,३६,७९० | २,८७,९६१ |
| काते गये सूतका वजन (रतलमें) | ६,८६८ | १४,८०० | १७,९९७ |
| अिसमें से कितनी चौरस गज खादी बन सकेगी? | ३१,६१० | ५९,१९७ | ७१,९९० |
| कितने विद्यार्थी वस्त्र-स्वावलम्बी बन सकते हैं? (प्रति व्यक्ति १० गज मानकर) | ३,१६१ | ५,९२० | ७,१९९ |

हमें यह सोचना चाहिये कि सूरत जिलेमें यह सफलता कैसे मिली? अगर सूरत जिलेमें वह सफल हो सकती हैं, तो दूसरे जिलोंमें भी वही अनुभव आना चाहिये। क्योंकि भारतभरमें हमारी संस्कृति-परंपरा अेकसी ही है; विद्यार्थी और पालकोंकी मनोवृत्ति समान ही है।

सफलता न मिलनेका बड़ा कारण यही हो सकता है कि अधिकारीवर्ग और अध्यापकोंकी अिस विषयमें श्रद्धा तथा दिलचस्पी कम है। अध्यापकवर्गका प्रशिक्षण भी ठीक नहीं हुआ होगा। बम्बअी राज्यके कुछ जिलोंकी यह शिकायत है कि अधिकारीवर्ग द्वारा साधन-सामग्री अच्छी और समय पर नहीं मिलती। सूरत जिलेकी बात यह है कि वहांके बोर्डके अध्यक्षसे लेकर नीचे तक सारे अधिकारी अिस कामको करनेमें अुत्साह रखते हैं। श्री कल्याणजीभाअी, जो बोर्डके अध्यक्ष हैं, खादीनिष्ठ हैं। वे लगातार कअी वर्षोंसे बोर्डके अध्यक्ष चुने जाते रहे हैं, जिससे शालाओंमें कताअी-शिक्षणको प्रेरणा और प्रोत्साहन देनेमें कमी नहीं रही। अिसके अलावा सूरत जिलेमें अनेक रचनात्मक संस्थायें हैं, जिनकी अिस काममें पूरी सहानुभूति रही और शालायें अुनसे मदद लेकर लाभ अुठाती रहीं।

सूरत जिलेका यह प्रयोग बतलाता है कि अगर कताअीमें श्रद्धा हो और वह अुत्साहपूर्वक चलाअी जाय, तो अुसमें हर जगह सफलता मिलनी चाहिये। जैसी परिस्थिति वहां है, वैसी दूसरी जगह भी प्राप्त हो सकती है। शर्त अितनी ही है कि प्रयत्न दिलसे होना चाहिये।

मुझे यह लेख लिखनेकी अिच्छा अिस कारण भी हुअी कि भारत-सरकारने हालमें ही खादी-ग्रामोद्योग बोर्डकी स्थापना की है। अुसके फलस्वरूप खादी-काम बड़ी मात्रामें बढ़ना चाहिये। अुस कामको बढ़ानेके लिअे और खादीकी बिक्रीके लिअे अनुकूल वातावरणकी आवश्यकता है। वैसा वातावरण खड़ा करनेके लिअे चरखा-संघने जो सूचनाअें की हैं, अुनमें अेक यह भी है कि भारतभरकी प्राथमिक और मिडिल तककी पाठशालाओंमें हाथ-कताअी लाजिमी तौर पर दाखिल की जाय। शिक्षाशास्त्रकी दृष्टिसे भी अैसा हाथ-अुद्योग बड़ी कामकी चीज है। प्लानिंग-कमीशनवालोंसे जब चरखा-संघवालोंकी चर्चा हुअी थी, तब अैसी आशा थी कि कुछ हद तक यह काम बन सकेगा। अब देखना है कि भारत-सरकार अिस विषयमें क्या करती है। हमें अिस बातका भान है कि प्रायः कताअीका विषय सत्ताधारियों तथा अधिकारियोंको प्रिय नहीं है। कुछ लोग यह भी शंका करते हैं कि अिसमें सफलता नहीं मिलेगी। सूरत जिलेका अुदाहरण हमारे सामने है। अतः सफलताके बारेमें शंका करना अुचित नहीं होगा।

२९–५–'५३ **श्रीकृष्णदास जाजू**

[श्री जाजूजीका यह कहना बिलकुल ठीक है कि यदि हमारे शिक्षाके संचालकोंमें, यानी हमारे शिक्षकगण और सरकारी शिक्षा-विभागके अफसरोंमें श्रद्धा और अुत्साह हो, तो शिक्षामें अुद्योगकाम सफल ही होगा। अैसा अनुभव खेड़ा और अहमदाबादके स्कूल बोर्डोंसे भी जाननेको मिलता है।

शिक्षामें अुद्योगकाम दाखिल करना अेक बड़ी क्रांति है। अुससे हम लोगोंमें अुत्पादक शरीरश्रमका गौरव और सामुदायिक रूपमें दस्तकारीकी जानकारी पैदा करना चाहते हैं। स्वराजके लिअे देशमें नयी तालीमकी स्थापना करनी हो, तो अुसकी नींवमें हमें यह बात रखनी होगी। अिसके बिना शिक्षामें आमूलाग्र सुधार नहीं होगा।

१२–६–'५३ —म० प्र०]

## विवाहमें होनेवाले खर्च

अेक विद्यार्थी मित्र, जो आजकल अफ्रीकामें हैं, हमारे यहां विवाहोंमें होनेवाले खर्चके बारेमें लिखते हैं:

"हमारे यहांके विवाहोंमें होनेवाले खर्च और अुसके कारण हमेशाके लिअे पैदा होनेवाली अनेक परिवारोंकी आर्थिक बरबादीके बारेमें तो सब कोअी जानते ही हैं। लेकिन अिस बातकी बहुत कम लोगोंको खबर होगी कि वही पद्धति ठेठ यहां अफ्रीका तक भी आ पहुंची है। अेक मनुष्य अपनी कड़ी मेहनतसे पैदा किये हुअे २५–३० हजार शिलिंग दो-चार दिनमें ही खतम कर देता है। . . . यह सब सामाजिक पद्धतियोंके चले आ रहे प्रवाहमें स्वेच्छापूर्वक बह जानेका ही परिणाम है। अुस प्रवाहसे बाहर निकलनेके लिअे जहां थोड़ा विचार करके अेक कदम बाहर रखा कि तुरन्त ही सारे दुःखोंका अन्त हो जाता है। लेकिन शायद ही कभी कोअी युवक अैसा साहस बतलाता है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि अब सीधेसादे ढंगसे होनेवाले विवाहोंके किस्से बिलकुल नये नहीं रहे। लेकिन अिसके बावजूद अुनकी संख्या बहुत थोड़ी ही है। अैसी परिस्थितिमें क्या हमारे समाजशास्त्रियोंका यह फर्ज नहीं है कि वे विवाह-पद्धतिके बारेमें, जो कि जीवनका बहुत महत्त्वपूर्ण प्रसंग माना जाता है, गहराअीसे विचार करके मार्गदर्शन करें?"

और वे कहते हैं कि क्या कोर्टमें जाकर नाम लिखा लेनेकी विवाह-पद्धति ठीक नहीं है? क्योंकि वे अैसा मानते हैं कि अिससे अपने आप खर्चमें कमी हो जायगी और विवाह-विधिमें सादगी आ जायगी।

www.vinoba.in

विवाहमें भारी खर्च करनेकी कुप्रथा हम जहां भी गये हैं, वहां हमारे साथ गअी है। और मौजूदा आर्थिक तंगी और महंगाओके जमानेमें तो वह बड़ी खराबी और बरबादी करती है। लेकिन अब तो वह हमारे लिअे 'आदतसे लाचार हैं' वाली बात बन गअी है।

पत्र-लेखक मानते हैं कि कोर्ट-पद्धतिसे विवाह होने पर अपने आप अुसमें सादगी आ जायगी। लेकिन वस्तुस्थितिको देखते हुअे क्या यह बात सही मालूम होती है? अीसाअी लोगोंमें कोर्ट-पद्धति ही प्रचलित है। वे लोग भी अिसमें जो सादगी है, अुसे रख पाये हों अैसी बात नहीं है। अपनी सादी धर्म-विधिके साथ-साथ अुन्होंने भी अपने ढंगसे अुसके आसपास तरह-तरहके खर्चीले रीति-रिवाजोंके ताने-बाने खड़े कर दिये हैं — प्रीतिभाज, 'रिसेप्शन', 'हनीमून-यात्रा' आदि। हमारे यहां भी ये चीजें शहरोंमें कोर्ट-विधिके साथ-साथ प्रवेश करती हुअी नजर आ रही हैं। अिसका मतलब यह हुआ कि केवल कोर्ट-विधि अंगीकार करनेसे अपने आप विवाहमें सादगी आ जायगी, अैसा माननेमें विचार-दोष है। सादी और सरल धर्म-विधि भी आधे घंटेमें सादगी, गंभीरता और गौरवके साथ पूरी हो सकती है। जैसा कि गांधीजीने अनेक बार अपने आश्रममें कर दिखाया था और हमारे जमानेके अनुकूल अेक नअी विवाह-विधि भी अुन्होंने तैयार कर दी थी। ('हरिजनसेवक' ता० १४-३-'५३ के अंकमें अिस बारेमें श्री काकासाहब कालेलकरका लेख देखिये।) लेकिन वह बहुत आगे नहीं चली। चाहें तो अब भी हम अुसे अपना सकते हैं।

विवाहमें अत्यधिक खर्चका सवाल खास करके मध्यमवर्गका है। अुच्च धनिक वर्गको खर्चका दुःख नहीं है। समाजकी स्थितिको समझकर वह अपने पर अंकुश रखे और अेक धर्म-विधिको अपने वैभवका प्रदर्शन न बनाये, अैसी आशा अिस वर्गसे नहीं की जा सकती। अिसका परिणाम मध्यमवर्ग पर होता है। दूसरी ओर निचले गरीब वर्ग हैं; अूंचे वर्गोंके रीति-रिवाज देखकर अुनकी विवाह-पद्धति भी भरसक खर्चीली तो बनी है; फिर भी अुसमें सादगी और मर्यादा है, कारण अुन्हें यही पुसा सकता है। अिस तरह सवाल खास करके मध्यमवर्गका है। वे लेन-देन और दहेज आदिके बारेमें खूब ही अविचारी बनते जा रहे हैं। यही बात कपड़ों और गहनोंमें भी होती है। अिसलिअे कन्याके पिताकी परेशानी बढ़ती ही जाती है।

आज तो दूसरे पहलूसे भी यह सोचने जैसी बात है। देश अपना नवनिर्माण कर रहा है। अुसके लिअे यथाशक्ति धनकी बचत करनी चाहिये। प्रतिवर्ष प्रति विवाहके पीछे अैसी कितनी बचत की जा सकती है? यह रकम कितनी बड़ी होगी? देशमें आजकल आर्थिक स्थितिके सुधार पर भी अधिक ध्यान दिया जा रहा है। लेकिन समाज-सुधारका सवाल भी अुतना ही महत्त्वका है, और जनताको अिस ओर ध्यान देना चाहिये। देशका सर्वांगीण नवनिर्माण करनेके लिअे ही हमने आजादी प्राप्त की है। हमारी १९३० की स्वातंत्र्य-प्रतिज्ञा देखिये। अुसमें हमने संकल्प किया है कि विदेशी राज्यने हमारी जो आध्यात्मिक, नैतिक, आर्थिक और सामाजिक अवनति की है, अुसे हमें सुधारना है। यह काम सरकार नहीं कर सकती; वह प्रजाके नेताओंका काम है। यह सच है कि विवाहके सिवा भी दूसरे अनेक प्रश्न हैं। अुन सबमें अब विचारपूर्वक सुधार होनेकी जरूरत है।

७-५-'५३
(गुजरातीसे)

**मगनभाअी देसाअी**

# कानून और सरकारी मत

सम्पादक, 'हरिजन'

महाशय,

मैंने आपका ९-५-'५३ के 'हरिजन' में प्रकाशित 'भूदान-यज्ञ और शोषण-निवारण' लेख ('हरिजनसेवक', २-५-'५३) गहरी दिलचस्पीके साथ पढ़ा। अुसमें आप कहते हैं कि "यदि सरकार और कार्यकर्ता लोग दोनों मिलकर धैर्यसे किसानोंमें काम करते रहें, तो यह अुनके संगठित शांत बलसे बननेवाली चीज है।" लेकिन मुझे खेद है कि अिस क्षेत्रमें मेरा पिछले छः वर्षका अनुभव बहुत निराशाजनक है। सरकारमें मामलतदार और माल महकमेके दूसरे कर्मचारी होते हैं, जो लगभग हमेशा जमींदारोंका ही पक्ष लेते हैं। काश्तकारी कानूनके अनुसार अिस जिलाकेके काश्तकारोंने जमीन खरीदनेके लिअे अर्जियां दी हैं। जमींदार अदालतमें गैरहाजिर रहकर, जमीनोंके रकबेकी ठीक जानकारी न देकर तथा और कअी तरहसे अुसमें अड़चनें पैदा करते हैं। काश्तकारोंके कागजात यहां-वहां रखकर गायब कर दिये जाते हैं। सरकारी कर्मचारी जानबूझकर केस टालते रहते हैं। मैं आपको अिस बातके जितने चाहें अुतने सबूत दे सकता हूं।

मुझे पूरा निश्चय हो गया है कि जब तक छोटे सरकारी कर्मचारी अीमानदारीसे काम नहीं करते, तब तक काश्तकारोंकी दशामें कोअी सुधार नहीं हो सकता। कानून अपने आप काम नहीं कर सकता।

**व्ही० अेन० खानोलकर**

[लेखका शीर्षक 'कानून और लोकमत' नहीं, 'कानून और सरकारी मत' है; अुसकी यह विशेषता पाठकोंका ध्यान खींचेगी। लोकतंत्रमें लोकमत ही कानूनका नियंत्रण करता है। सरकारी कर्मचारी तो दक्षता और तत्परताके साथ मौजूदा कानूनके अमलकी व्यवस्था करता है। अिससे अलग अुसका कोअी असरकारक भिन्न मत नहीं हो सकता। लेकिन हमारे दुर्भाग्यसे हमारे नये लोकतंत्रमें कभी-कभी अिस नियमका अुल्लंघन भी होता है और अकसर अिस किस्मकी शिकायतें हमारे कानों पर आती हैं जैसी कि अूपर दी गयी है। पुराने ब्रिटिश शासकोंकी आज्ञाके अनुसार शासन करनेवाली नौकरशाहीको दूसरी तरहकी तालीम मिली थी और परिस्थिति बदल जाने पर भी शायद अुनकी आदत नहीं बदल रही है, जिससे समाजसेवाका काम करनेवाले अीमानदार सुधारकों और कार्यकर्ताओंको बड़ी परेशानी अुठानी पड़ती है। लोकतंत्रके अनुरूप सुयोग्य शासनाधिकारियोंकी संस्थाका निर्माण और विकास होना अभी हमारे यहां बाकी है।

अिस तसवीरका अेक दूसरा पहलू भी है। जनता भी पुराने शासनके दूषित प्रभावसे बिलकुल मुक्त नहीं हुअी है। अुसका व्यवहार भी लोकतंत्रके अनुरूप बदलना चाहिये। जैसी जनता है, वैसे ही अुसके शासक अधिकारी हैं। लेकिन अंग्रेजीकी अिस कहावतके अनुसार कि राजा — आज प्रजा ही राजा है — अपराध नहीं कर सकता, दोष सरकारी अधिकारियोंका ही मानना होगा। अुन्हें राज्यके मौजूदा कानूनोंके अमलकी पूरी निष्ठा और अीमानदारीके साथ निर्दोष व्यवस्था करनी चाहिये और अिस बातका खयाल रखना चाहिये कि वे जो भी करें अुससे लोगोंके मन पर यह छाप नहीं पड़े कि कभी-कभी वे राज्यकी अुन नीतियोंको छिपे तौर पर विफल करनेकी कोशिश करते हैं, जिन्हें वे शायद नागरिकके नाते पसन्द नहीं करते।

२-६-'५३
(अंग्रेजीसे)

— म० प्र०]

www.vinoba.in

## सबको पूरा काम देनेका चतुर्विध कार्यक्रम

देशमें बेकारी और अर्ध-बेकारीकी हमेशा बढ़ रही खाअी हमारा दुश्मन नंबर अेक है। यह बेकारीकी समस्या स्थायी रूपसे तभी हल हो सकती है, जब हम अपनी आर्थिक और शिक्षाकी पद्धतियोंमें कुछ क्रांतिकारी सुधार करेंगे।

सबसे पहले, भारतमें विशाल पैमाने पर जमीनका फिरसे बंटवारा करनेकी दृष्टिसे बहुत व्यापक असर डालनेवाला जमीन-सम्बंधी कानून बनाना होगा। आचार्य विनोबा भावेके हिसाबसे कुछ बरसोंमें बेजमीन मजदूरोंमें करीब पांच करोड़ अेकड़ जमीन बांटी जानी चाहिये। अिससे भारतके अेक करोड़ परिवारोंको काम मिलेगा। योजना-कमीशनकी अपनी सिफारिशोंके अनुसार अेक परिवारके पास रहनेवाली जमीनकी अूंचीसे अूंची मर्यादा बिना किसी शर्तके यथासंभव जल्दी बांध दी जानी चाहिये और दरअसल जमीन जोतनेवालोंको ही जमीनके मालिक बना देना चाहिये।

दूसरे, रोजाना अिस्तेमालकी चीजें तैयार करनेवाले अुद्योगोंको विकेन्द्रित करनेके लिअे हमें हिम्मतके साथ अपने औद्योगिक ढांचेको फिरसे खड़ा करना होगा। जब तक हम भारतमें छोटे पैमानेके ग्रामोद्योगों और गृह-अुद्योगोंको फिरसे जिलानेकी साहसपूर्ण नीति नहीं अपनायेंगे, तब तक कंगालीके शिकार बने हुअे करोड़ों लोगोंको पूरा काम देनेका हमारा ध्येय सिद्ध नहीं हो सकता। बड़े पैमानेके अुद्योगोंके विस्तार और क्षेत्रको किसी तरह कम किये बिना छोटे पैमानेके अुद्योगोंके विकासका प्रयत्न करनेका अर्थ होगा देशमें लोगों पर जबरन् लादी हुअी बेकारीको मिटानेके प्रश्नके साथ खिलवाड़ करना। बेशक, अपने छोटे पैमानेके अुद्योगों और गृह-अुद्योगोंको ज्यादासे ज्यादा कार्यक्षम बनानेके लिअे हमें आधुनिक विज्ञानके लाभोंका अुपयोग करना चाहिये। लेकिन दृढ़ अिच्छा और नष्टप्राय ग्रामोद्योगों और गृह-अुद्योगोंको फिरसे जमानेके निश्चयके बिना लोकहितकारी राज्यकी स्थापनाके लिअे आर्थिक योजना बनानेकी सारी बातें बेकार साबित होंगी।

तीसरे, हमारी शिक्षा-पद्धतिमें जड़मूलसे सुधार होना चाहिये, ताकि हमारे नवयुवक और नवयुवतियां शिक्षण-संस्थाओंमें आजकी तरह केवल पढ़ने और नौकरीके लिअे अुत्सुक रहनेके बजाय काम कर सकें, पढ़ सकें और कमाअी भी कर सकें। गांधीजीने जिस बुनियादी शिक्षा-पद्धतिकी कल्पना की थी, वह हमारे भावी शिक्षा-तंत्रकी बुनियाद बन जानी चाहिये। हमारे लड़के और लड़कियोंको विद्यार्थी-जीवनमें केवल अितिहास, भूगोल, विज्ञान और नागरिक शास्त्र जैसे तथाकथित शैक्षणिक विषयोंकी शिक्षा न मिले, बल्कि कुछ दस्तकारियोंकी भी शिक्षा मिलनी चाहिये, जिसके जरिये स्कूलों और कालेजोंका अभ्यास पूरा करनेके बाद वे अपना गुजर-बसर चला सकें।

अन्तमें, हमें अपने पड़ोसियों द्वारा तैयार की हुअी स्वदेशी चीजोंको आश्रय देना चाहिये। अुनकी अूंची कीमतोंकी शिकायत करनेके बजाय हमें देशप्रेम और बन्धु-प्रेमकी भावनासे गृह-अुद्योगोंकी चीजें खरीदनी चाहियें।

हम अपने दुश्मन नंबर अेककी शक्तिको कम न आंकें। वह हमारी लोकशाही और समाजके शांतिपूर्ण कायापलटके लिअे अेक स्थायी चुनौती है। समयका हमारे लिअे बहुत बड़ा महत्त्व है। बेकारी, गरीबी और भूखकी समस्या हमें जल्दी ही हल करनी चाहिये। देर करना घातक और खतरनाक होगा। हमें धर्मयुद्धकी भावनासे बेकारीके साथ युद्ध करना चाहिये; अिसे हमें अपना 'करो या मरो' का मिशन मानना चाहिये।

**श्रीमन्नारायण अग्रवाल**

(१५-५-'५३ के अे० आअी० सी० सी० 'अिकॉनामिक रिव्यू 'से)

## टिप्पणियां

### कलाकारों और साहित्यिकोंसे

भूदान-यज्ञ युगक्रांतिकी दिशामें अेक नया कदम है, जिस ओर दुनियाके विचारकोंका ध्यान आकर्षित हुआ है। आन्दोलनकी सहज रफ्तार शोषणहीन व साम्ययोगी समाजकी नींव डाल रही है। मानवके हृदयमें नअी भावनाओंका मंथन आरम्भ हुआ है। अैसी मनःस्थितिमें हृदयको हिलाकर अुसे अुचित दिशाकी ओर अुत्साहित व गतिमान करनेका अद्वितीय सामर्थ्य कलाकारों और साहित्यिकोंमें है। अतः कलाकारों और साहित्यिकोंसे निवेदन है कि वे अपनी कलाकृतियोंसे लोगोंको जाग्रत करनेमें हमें सहयोग दें और अहिंसक क्रांतिको सफल बनानेमें हाथ बंटायें।

भूदान-यज्ञका अेक स्थायी प्रदर्शन तैयार करनेका सर्व-सेवा-संघका विचार है। अिसलिअे भूदान-यज्ञको प्रेरणा देनेवाले चित्र, नकशे, गीत (स्वररचना सहित), चार्ट्स, फोटो अित्यादिका संग्रह करनेका सोचा है। साहित्यकार व कलाकार अपने पासके पुराने या नवनिर्मित साहित्य, चित्र, गीत (स्वररचना सहित), फोटो, नकशे, चार्ट्स आदि हमें नीचेके पते पर भेजें।

चित्र, फोटो आदि चीजें बड़ी सावधानीसे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा भेजी जायं। कलामय चीजोंके खर्चकी अपेक्षा रखनेवाले अिस बातका निर्देश जरूर करें, ताकि अुनकी चीजोंके पसन्द होने पर अुन्हें योग्य खर्च भेजनेकी व्यवस्था की जा सके।

सेवाग्राम, वर्धा

**वल्लभस्वामी**
सहमंत्री
अ० भा० सर्व-सेवा-संघ

### भूदान-प्राप्ति

| | | |
|---|---|---|
| पिछली प्राप्ति ५ मअी तक | १२,२४,७३७ अेकड़ | |
| नअी प्राप्ति २० मअी तक | ५४,६८३ | " |
| कुल प्राप्ति | १२,७९,४२० | " |

**भूमि-वितरण**

| | | |
|---|---|---|
| ता० २० मअी तक | २८,८२३ | " |


## गांधी और साम्यवाद

[ श्री विनोबाकी भूमिकाके साथ ]

लेखक : किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद - ९


### विषय-सूची


| | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| स्वतंत्र भारतमें विदेशी मिशन | गांधीजी | १२१ |
| गयामें विनोबाजी — २ | नि० दे० | १२२ |
| शंकाका कोअी कारण नहीं है | मगनभाअी देसाअी | १२४ |
| प्राथमिक शालाओंमें कताअी | श्रीकृष्णदास जाजू | १२५ |
| विवाहमें होनेवाले खर्च | मगनभाअी देसाअी | १२६ |
| कानून और सरकार: मत | व्ही० अेन० खानोलकर | १२७ |
| सबको पूरा काम देनेका चतुर्विध कार्यक्रम | श्रीमन्नारायण अग्रवाल | १२८ |
| टिप्पणियां : | | |
| कलाकारों और साहित्यिकोंसे | वल्लभस्वामी | १२८ |
| भूदान-प्राप्ति | | १२८ |


www.vinoba.in